भूमंडलीय संस्कृति के बरक्स उदय प्रकाश का कथा-साहित्य

प्रशांत सरकार
सहायक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग
कार्सियांग कॉलेज,
दार्जिलिंग(प. बंग.)

सामान्यत: किसी भी संस्कृति को साहित्य व कला की उत्कृष्ट उपलब्धियों के साथ जोड़कर देखा जाता है। प्रत्येक समाज का जीवन-दर्शन, वेश-भूषा, रहन-सहन, खान-पान, चिंतन, उसके आदर्श एवं जीवन-मूल्य और उसका समस्त परिवेश– सामाजिक, बौद्धिक तथा नैतिक ये तमाम पक्ष संस्कृति के अंतर्गत आते हैं। किंतु यह सब कुछ किसी समाज को एक समान स्तर पर सहज उपलब्ध नहीं हो जाता। इसे प्राप्त करने के लिए किसी भी समाज को सदियों तक का सफर करना पड़ता है तथा पीढ़ी-दर पीढ़ी के प्रयत्नों से अर्जित किया जाता है। इस अर्जन की प्रक्रिया ने ही संस्कृति को जानने-समझने के सूत्र दिए हैं। संस्कृति परंपरा से ही आगे बढ़ती है और नित नए-नए अनुभवों से संयुक्त होकर अपना संवर्द्धन करती चलती है। मनुष्य समाज में रहकर ही संस्कारों के माध्यम से संस्कृति को जानता है एवं संप्रेषित करता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि संस्कृति मानवीय जीवन का अभिन्न अंग है। यह संस्कृति ही है जो मानव को अन्य प्राणी जगत से विशिष्ट कोटि का स्थान प्रदान करती है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो पशु से ही मानव तक की यात्रा संस्कृति के मार्ग से ही तय होती है। इसीलिए शास्त्रों में कहा गया हैं कि 'संस्कारहीना पशुभी समाना' अर्थात संस्कार के बिना मनुष्य पशु के समान है। अत: हम कह सकते हैं कि जो जितना संस्कृति के साथ युक्त है वह उतना ही मानव है।

आज जहाँ भूमंडलीकरण के इस दौर में सिर्फ उपभोक्तावादी संस्कृति को ही बढ़ावा दिया जा रहा है, वहाँ उपनिवेशवादी प्रवृत्ति ने मानवीय संवेदना तथा सहानुभूति को मृतप्राय बना दिया है। यही कारण है कि आज हमारे देश की संस्कृति, जीवन-दर्शन, खान-पान, रहन-सहन, उसका वेश-भूषा, उसका चिंतन, उसके आदर्श एवं जीवन-मूल्य आदि पर कुत्सित प्रभाव पड़ता दिखाई देता है। उदय प्रकाश जैसे रचनाकार स्वयं को इससे दूर नहीं रख पाए हैं। आज संचार, प्रचार-प्रसार, आविष्कार, ज्ञान-विज्ञान, बाजार और तकनीकी के समय में भी वे अपनी कविताओं और कहानियों के माध्यम से इसका प्रखर विरोध प्रकट करते हुए देशवासियों को इससे आगाह करते रहते हैं। इसीलिए रचनाकार उदय प्रकाश जी का कहना हैं कि "यही वह आदमी है, जिसके लिए संसार भर की औरतों के कपड़े उतारे जा रहे हैं, तमाम शहरों के पार्लर्स में स्त्रियों को लिटाकर उनकी त्वचा से मोम के द्वारा या एलेक्ट्रोलिसिस के जरिए रोयें उखारे जा रहे हैं, जैसे पिछले समय में गड़रिये भेड़ों की खाल से ऊन उतारा करते थे। राहुल को साफ दिखाई देता कि तमाम शहरों और कस्बों के मध्य-निम्न मध्यवर्गीय घरों से निकल-निकल कर लड़कियां उन शहरों में कुकुरमुत्तों की तरह जगह-जगह उगी ब्यूटी-पार्लर्स में मेमनों की तरह झुंड बनाकर घुसतीं और फिर चिकनी-चुपड़ी होकर उस आदमी की तोंद पर अपनी टांगें छितरा कर बैठ जाती। इन लड़कियों को टीवी 'बोल्ड एंड ब्यूटीफुल' कहता और वह लुजलुजा-सा तुंदियल बूढ़ा खुद 'रिच एंड फेमस' था।"[1] इस प्रकार उच्च वर्ग के लोगों ने किस प्रकार से साधारण आम आदमी को अपनी मुट्ठियों में कैद कर लिया है,

इसे उदय प्रकाश की रचनाएँ उजागर करती हैं। उनकी रचनाओं के माध्यम से आज के बाजारवादी संस्कृति को समझा जा सकता है। आज भूमंडलीकरण का मकसद है- उद्योगों को बढ़ावा देना और उद्योगों का मकसद है- पूँजी का लालच देकर साधारण जनों, किसानों, मजदूरों, महिलाओं और बच्चों आदि का प्रयोग करना। इससे हमारे पारंपरिक मूल्य और परिवार बिखरते चले गए और सामूहिक परिवार टूटते चले गए हैं, क्योंकि "बाजार अब सभी चीजों का विकल्प बन चुका था। शहर, गाँव, कस्बे बड़ी तेजी से बाजार में बदल रहे थे। हर घर दुकान में तब्दील हो रहा था। बाप अपने बेटे को इसलिए घर से निकालकर भगा रहा था, की वह बाजार में कहीं फिट नहीं बैठ रहा था। पत्नियाँ अपने पतियों को छोड़-छोड़कर भाग रही थीं, क्योंकि बाजार में उनके पतियों की कोई खास माँग नहीं थी। औरत बिकाऊ और मर्द कमाऊ का महान् चकाचक युग आ गया था।"[2] रचनाकार उदय प्रकाश जी इस तेजी से बदलते परिवर्तन को देख भी रहे हैं और उसकी भयानकता और विभीषिका को समझ भी रहे हैं। इसीलिए वह देश की इस मर्मांतिक पीड़ा को अपने अंतर्मन से अनुभव करते हुए अपनी कहानियों में स्वर प्रदान करते हैं। आज हमारे देश पर पश्चिमी प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। आज का यह बाजारवादी संस्कृति ने भारतीयों के बाज़ारों पर किस ढंग से हमला किया है इसका वर्णन करते हुए उदय प्रकाश जी लिखते हैं "तो यह वह समय है जब इंडिया के बाज़ारों में तरह-तरह के परफ्यूम, कॉस्मेटिक्स, सॉफ्ट ड्रिंक्स, एलेक्ट्रिकल और एलेक्ट्रोनिक गजेट्स, वॉशिंग मशीन, सेलुलर फोन, डिजिटल टी.वी., हैंडी कैम अंटे पड़े थे। हर हफ्ते आधा दर्जन कारों के नए मॉडल सामने आ रहे थे। दिल्ली में मैक्डोनल, केएफसी और निरूलाज के सैकड़ों ईटिंग ज्वायान्ट्स खुल रहे थे। राजधानी और दूसरे बड़े शहरों में नाइट क्लब्स खुल गए थे, जहाँ रात में अधनंगी मॉडल्स व्हिस्की और वाइन बेचती थी और जहाँ मंत्रियों-नौकरशाहों और अपराधियों की सन्तानें ऐश करती थीं। देशी-विदेशी सट्टेबाज खुले आम लोगों में जुए और लाटरी की लत डालकर उन्हें करोड़पति और दस करोड़पति बनाने का स्वप्न दिखा रहे थे। एक दिन में एक देश के मंत्री और नौकरशाह जीतने का लंच कर जाते थे, सिर्फ उतने रुपयों से सारे गांवों में पीने की पानी, स्कूलों में अध्यापक और ब्लैकबोर्ड, खेतों और घरों में बिजली और झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वालों के लिए हगने-मूतने का शौचालय लग सकता था।"[3] इस प्रकार उदय प्रकाश अपनी रचनाओं के माध्यम से उस आयातित पूंजीवादी संस्कृति का खासा विरोध करते हैं जो हमारे परंपरागत रीति-रिवाजों को गहरा आघात पहुँचा रही हैं। आज हमारी संस्कृति के ऊपर यूरोपीय आयातित विचारधारा के आवरण से ढकती जा रही है जिससे भारतीय संस्कृति और परंपरा को गहरा आघात पहुँचाया जा रहा है। हमारे परंपरागत रीति-रिवाज, आचार-आचरण, विचार-मंथन, खान-पान, रहन-सहन, आतिथ्य-सत्कार आदि सब कुछ नष्ट होता जा रहा है। रचनाकार ऐसी अपसंस्कृति की बढ़ता वर्चस्व से व्यथित हैं एवं संशय की दृष्टि से आने वाली पीढ़ी को देख रही हैं। इसीलिए प्रश्न पूछता हैं कि "भारत की नई पीढ़ी आखिर कौन- सी है, जो आने वाले दिनों को आकार देगी? क्या इंडिया का नया 'एस्क–वाई' जेनेरेशन वह है, जो टीवी में, सिनेमा में, फैशन परेडों और दिल्ली–मुंबई-कलकत्ता-बंगलूर से निकालने वाले अंग्रेजी के रंगीन अखबारों में पेप्सी पीता, क्रिकेट खेलता, पॉप म्युजिक एलबम में नंगी-अधनंगी लड़कियों के साथ हिप्पियों जैसा नाचता या ज्यादा से ज्यादा दौलत कमाने के लिए एम.एन.सी. की नौकरियों के लिए माँ-बाप को लतियाता और तमाम परंपराओं पर थूकता हुआ अमेरिका, कनाडा, जर्मनी भाग रहा है ? या नया जेनेरेशन वह है, जो असम, मोजोरम, मणिपुर, आंध्र, कश्मीर, बिहार, तमिलनाडू से लेकर तमाम नरक जैसे पिछड़े इलाकों में ए.के.- 47, बारूदी सुरंग, तोड़ फोड़ और हताशा हिंसक वारदात में शामील हैं ? या फिर रोजीरोटी न होने की निराशा में हर रोज आत्महत्याएं कर रहा है ? नया जेनेरेशन कौनसा है ? जिसके एक हाथ में पेप्सी, बगल में एक अधनंगी मॉडल और जेब में क्रेडिट कार्ड और वीजा है या वो जिसकी आंखे लाल है, जिसके माँ–बापों को पिछले पंचास सालों में शासकों द्वारा लगातार ठगा गया है और जिसके हाथ में फिलहाल हथियार है और जिसे हर रोज़ मुठभेड़ों में मारा जा रहा है?"[4] यही कारण है कि रचनाकार यूरोपीय आयातित विचारधारा एवं संस्कृति के प्रति विचलित दिखाई पड़ता हैं। यूरोपीय विचारधारा और संस्कृति भारतीय युवाओं को किस तरह से दिग्भ्रमित कर रही हैं। इस पर उन्होंने युवाओं की ओर संकेत करता

हुआ प्रश्न पूछता हैं "क्या पश्चिम की कंपनियों के राज के खिलाफ इस बार समूचे दक्षिणी एशिया में एक बहुत बड़ा गदर फिर होगा ? क्या इस बार इस 'इंडिया कंपनी सरकार' की फौज उस स्वाधीनता संग्राम को 1857 की तरह फिर कुचल डालेगी और उसके बाद क्या कोई अधनंगा, लंगोटी लगाने वाला, वंचितों और दरिद्रों का एक नया प्रतीक फिर कहीं इस अंधकार से निकाल आयेगा और सटोरियों, दलालों, अपराधियों और ठगों के इसभ्रष्ट ब्राह्मण-बनिया बाजार व्यवस्था को निहत्ता चुनौती देगा? इस मार्केट एंपायर में जो सूरज एक बार फिर नहीं डूबता दिखाई देता, वह बंगाल की खाड़ी या हिंद महासागर में फिर एक बार डूबा दिया जाएगा।"[5]

कहानीकार उदय प्रकाश उपभोक्तावादी दुनिया की यथार्थ, उसकी सच्चाई से पाठकों को अवगत कराना चाहता है । अमेरिका और यूरोप जैसे शक्तिशाली एवं विकसित देश व्यापारी देशों में बदलकर तीसरी दुनिया के देशों को उन्होंने अपनी मंडियों में तब्दील कर रख दिया हैं और उन्हें उथल-पुथल कर, हिंसा, बर्बरता, विघटन और अपने दलालों से भर दिया हैं। इसी के चलते आज उन देशों में एक-एक कर उन समाजों और अतीत के उन सार्वभौम देशों के सारे पुर्जे, सारे अंग, सारे अवयव विखंडित होकर एक-दूसरे से टकराकर अपनी परंपरा और संस्कृति से बिखर रहे हैं, छूट रहे हैं । इस संदर्भ में रचनाकार उदय प्रकाश जी लिखते हैं कि "ये पश्चिम से सारी घटिया, खतरनाक, पतित और भोगवादी चीजें आयात करेंगे। जुआ, सट्टा, हथियार, केमिकल ड्रिंक्स, शराब, पोर्नोग्राफ़ी, पिज़ा, कार....मजा, भोग, सुख, उन्माद और हिंसा का सारा माल..... ये उसके पीछे पागल हो चुके है । पश्चिम का सबसे निकृष्ट, सबसे पतित प्रोडक्ट इन्हें चाहिए .... लेकिन वहाँ का जो सबसे उत्कृष्ट है, ये उसे मिटा डालना चाहते हैं । ये उसके हत्यारे हैं । दुश्मन । ... अमेरिका से ये गन खरीदेंगे और उससे क्राइस्ट को शूट कर देंगे ... पश्चिम की सबसे निकृष्ट चीज से पश्चिम के सबसे महान 'क्रांस्ट्रक्ट' की हत्या ... ये जापान से कार खरीदेंगे और उससे बुद्ध का सिर कुचल देंगे । इराक से ये बायोकेमिकल औज़ार लेंगे और उससे हजरत मुहम्मद को मरेंगे । इस्राइल से मिसाइल लाँचर लेंगे और उससे यहोवा के जिस्म के टुकड़े उड़ा देंगे । बर्बर शैतान !"[6]

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में थोड़ा विचार करें तो आज का जो समय है वह बाजार और लाभ का है । हमारे देश में ऐसी अपसंस्कृति विकसित होती जा रही है जिसमें आज उसी का वर्चस्व कायम है, उसी को सम्मान प्राप्त है जो अमेरिकी बाजार का उपभोक्ता है, जिसके पास धन है । जो व्यक्ति इस बाजारवादी संस्कृति में अपने को नहीं ढाल पाता उसे समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है। समाज में उसका कही मूल्य नहीं रहता है । उदय प्रकाश इस बाजारवादी अपसंस्कृति के फैलाव से अत्यधिक चिंतित दिखाई देते हैं । इसीलिए वह कह उठता हैं कि -"मैं बाजार का विरोधी नहीं हूँ। लेकिन मार्केट कोई 'कलक्टिव ड्रीम' नहीं है । यह कोई यूटोपिया नहीं है । इसमें कोई स्वप्न नहीं देखा जा सकता । इसमें ऐसा कुछ नहीं है जो उदात्त, विराट और नैतिक हो । मुनाफा, नगदी, लाभ, घाटा... इसके सारे 'इनग्रेडिएंट्स' क्षुद्र और छोटे हैं । यह लालच, ठगी, होड़, स्वार्थ और लूटखसोट के मनोविज्ञान से परिचालित होता है।"[7]

आज का युग विज्ञान एवं तकनीकी का युग है जिसमें ज्यादा से ज्यादा तकनीकी को बढ़ावा दिया जाता है । इस तकनीक के द्वारा प्रकृति और मनुष्य को गुलाम बनाये जाने का प्रयत्न हो रहा है । विडंबना तो यह है कि स्वयं मनुष्य ही इस षडयंत्र में सम्मिलित है। आज विकास के नाम पर जो व्यवस्थाए काम करती है वह दरअसल आदमी को ज्यादा-से-ज्यादा गुलाम बनाने की ही युक्ति है और इस युक्ति को मुट्ठीभर लोगों ने विकसित किया है, जो अधिक-से अधिक लोगों को गुलाम बनाने की ही एक योजना है। इस संदर्भ में रचनाकार उदय प्रकाश स्पष्ट शब्दों में लिखते हैं कि "प्रविधि दरअसल आदमी को ज्यादा-से-ज्यादा गुलाम बनाने की ही युक्ति है, और इस युक्ति को उन बहुत थोड़े-से लोगों ने विकसित किया है, जो ज्यादा आदमियों को कुछ थोड़े -से आदमियों के बराबर नहीं देखना चाहते ।"[8]

इस तरह कहानीकार उदय प्रकाश अपनी रचनाओं के माध्यम से यह संदेश देने की कोशिश की हैं कि उपभोक्तावादी संस्कृति के माया जाल के चक्कर में फँसकर और लोप, लालच से आकृष्ट होकर साधारण जन उस पर आधिपत्य होता जा रहा है जो हमारे जैसे देश के लिए कितना घातक सिद्ध हो रहा है। यही उपभोक्तावादी संस्कृति की असली चेहरा है। रचनाकार नव उपनिवेशिकरण के इस उपभोक्तावादी संस्कृति को अच्छी तरह जानता हैं, उसके दुष्परिणामों को अच्छी तरह पहचानता हैं। इसीलिए कहानीकार अपनी कहानियों के माध्यम से पाठकों को उसकी परिस्थितियों से अवगत कराते हुए उसके परिणामों से रू-ब-रू कराते हैं। यही उदय प्रकाश के कथा साहित्य की असली पहचान भी है।

संदर्भ सूची

1. प्रकाश, उदय. (2009). पीली छतरी वाली लड़की. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, पृ.सं. 11
2. प्रकाश, उदय.(2004). पॉल गोमरा का स्कूटर. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, पृ.सं. 37
3. प्रकाश, उदय. (2009). पीली छतरी वाली लड़की. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, पृ.सं. 95
4. वही, पृ – 66
5. वही, पृ – 67-68
6. वही, पृ- 130-131
7. वही, पृ- 90
8. प्रकाश, उदय.(2006). दत्तात्रेय के दु:ख. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, पृ.सं.14